श्रीमद् आचार्य नेमिचन्द्र
सिद्धान्तचक्रवर्ति विरचित

# लब्धिसार

## प्रथमोपशम सम्यक्त्व अधिकार

Presentation Developed By: Smt Sarika Vikas Chhabra

# अंतोकोडाकोडी, जाहे संखेज्जसायरसहस्से ।
# णूणा कम्माण ठिदी, ताहे उवसमगुणं गहइ ॥97॥

- अन्वयार्थ- (जाहे) जिस समय (संखेज्जसायरसहस्से णूणा) संख्यात हजार सागर कम (अंतोकोडाकोडी) अंत:कोड़ाकोड़ी सागरोपमप्रमाण (कम्माण ठिदी) कर्मों की स्थिति रहती है (ताहे) उस समय (उवसमगुणं गहइ) उपशम सम्यक्त्व को ग्रहण करता है ॥97॥

www.JainKosh.org

# सम्यक्त्व की प्राप्ति पर स्थिति-सत्त्व

जिस समय अंत:कोड़ाकोड़ी सागर प्रमाण पूर्व सत्त्व से

संख्यात हजार सागरोपम से कम अंत:कोड़ाकोड़ी सागर प्रमाण स्थिति-सत्त्व रहता है,

उस समय जीव; प्रथमोपशम सम्यक्त्व को ग्रहण करता है ।

अपूर्वकरण के प्रारंभ में अंत:कोड़ाकोड़ी सागर प्रमाण स्थिति-सत्त्व था । स्थितिकांडकघात के द्वारा सत्त्व की हानि होने पर संख्यात हजार सागर सत्त्व में घट गये तब सम्यक्त्व की उपलब्धि होती है ।

अथवा यों कहें कि सम्यक्त्व की प्राप्ति होती है, तब तक स्थिति-सत्त्व संख्यात हजार सागर घट जाता है ।

# तट्ठाणे ठिदिसत्तो, आदिमसम्मेण देससयलजमं ।
# पडिवज्जमाणगस्स वि, संखेज्जगुणेण हीणकमो ॥98॥

- अन्वयार्थ- (तट्ठाणे) उस स्थान में अर्थात् अन्तरायाम के प्रथम समय में (आदिमसम्मेण) प्रथमोपशम सम्यक्त्व के साथ (देससयलजमं) देशसंयम और सकलसंयम को (पडिवज्जमाणगस्स वि) प्राप्त होने वाले जीव का (ठिदिसत्तो) स्थिति-सत्त्व (संखेज्जगुणेण हीणकमो) क्रम से संख्यातगुणा हीन है ॥98॥

www.JainKosh.org

# चतुर्थ, पंचम, सप्तम गुणस्थान के साथ प्रथमोपशम सम्यक्त्व प्राप्त करने वाले जीव का स्थिति-सत्त्व

| मिथ्यात्व से यह गुणस्थान प्राप्त करे, तो | स्थिति-सत्त्व |
|---|---|
| चतुर्थ — अविरतसम्यक्त्व | अंत: कोड़ाकोड़ी सागर<br>४ |
| पंचम — देशसंयम | अंत: कोड़ाकोड़ी सागर<br>४ ४ |
| सप्तम — सकलसंयम | अंत: कोड़ाकोड़ी सागर<br>४ ४ ४ |

# विभिन्न स्थिति-सत्त्व

अविरत सम्यक्त्व के अभिमुख जीव को जो विशुद्ध परिणाम होते हैं, उनसे देशसंयम के अभिमुख जीव को अनंत गुणा विशुद्ध परिणाम होते हैं ।

परिणाम विशुद्ध होने से उनके पाया जाने वाला स्थितिखंड का आयाम भी संख्यात गुणा होता है ।

स्थितिखंड बढ़ने से स्थिति-सत्त्व संख्यात गुणा हीन होता है ।

इसी प्रकार देशसंयम के अभिमुख जीव के विशुद्ध परिणामों से सकलसंयम के अभिमुख जीव के परिणाम अनंत गुणे विशुद्ध होते हैं ।

इसीलिए देशसंयम के साथ प्रथमोपशम सम्यक्त्वी के स्थिति-सत्त्व से सकलसंयम के साथ प्रथमोपशम सम्यक्त्वी का स्थिति-सत्त्व संख्यात गुणा हीन होता है ।

# उवसामगो य सव्वो, णिव्वाघादो तहा णिरासाणो ।
# उवसंते भजियव्वो, णिरासणो चेव खीणम्हि ॥99॥

- अन्वयार्थ- (उवसामगो य सव्वो) दर्शन-मोहनीय का उपशम करने वाले सभी जीव (णिव्वाघादो) व्याघात से रहित हैं। (तहा) उसी प्रकार (णिरासाणो) सासादन गुणस्थान को प्राप्त नहीं होते हैं।
- (उवसंते) दर्शन-मोहनीय का उपशम होने पर (भजियव्वो) भजनीय हैं अर्थात् कोई सासादन गुणस्थान को प्राप्त होता भी है और नहीं भी होता है।
- (च) और (खीणम्हि) उपशम सम्यक्त्व का काल समाप्त होने पर (णिरासणो एव) सासादन से रहित ही हैं ॥99॥

www.JainKosh.org

# व्याघात, सासादन की संभावना

सम्यक्त्व के बाद का काल

सासादन रहित ही

x
x
x
x
x
x
x

प्रथमोपशम सम्यक्त्व काल

सासादन की प्राप्ति भजनीय

व्याघात से रहित

उपशमन काल

व्याघात से रहित,
सासादन से रहित

www.JainKosh.org

उपसर्ग रहित या उपसर्ग सहित होकर किसी ने दर्शन-मोहनीय का उपशम करना प्रारंभ किया । उस समय वह जीव निर्व्याघात है । अर्थात् उस उपशम करने के काल में ना उसका मरण होता है, ना ही उस प्रक्रिया में विच्छेद आता है । अब वह उपशमन विधि संपूर्ण होगी ही ।

इसी प्रकार यह उपशमक जीव सासादन से भी रहित है क्योंकि यहाँ पर मिथ्यात्व का उदय निरंतर है, जिससे मिथ्यात्व गुणस्थान ही बना हुआ है ।

दर्शन मोहनीय के उपशांत हो जाने पर अर्थात् प्रथमोपशम सम्यक्त्व की प्राप्ति होने पर अंत की 6 आवली में सासादन की प्राप्ति भजनीय है । अर्थात् सासादन हो भी सकता है, अथवा नहीं भी हो। इसके पूर्व वह प्रथमोपशम सम्यक्त्वी निर्व्याघात भी है और सासादन से रहित भी ।

प्रथमोपशम सम्यक्त्व का काल समाप्त होने पर सासादन से रहित ही है क्योंकि दर्शनमोह की 3 प्रकृतियों में से किसी एक का उदय होता ही है । यहाँ व्याघात सहित भी है क्योंकि आयु क्षय से मरण भी संभव है ।

# उवसमसम्मत्तद्धा, छावलिमेत्ता दु समयमेत्तो त्ति ।
# अवसिट्ठे आसाणो, अणअण्णदरुदयदो होदि ॥100॥

- अन्वयार्थ- (उवसमसम्मत्तद्धा) उपशम सम्यक्त्व का काल (छावलि मेत्ता दु) छह आवली से लेकर (समयमेत्तो त्ति) एक समय पर्यन्त (अवसिट्ठे) शेष रहने पर (अणअण्णदरुदयदो) अनन्तानुबन्धी कषाय में से किसी भी एक कषाय के उदय से (आसाणो) सासादन (होदि) होता है ॥100॥

www.JainKosh.org

# सासादन सम्यक्त्व

स + आसादना

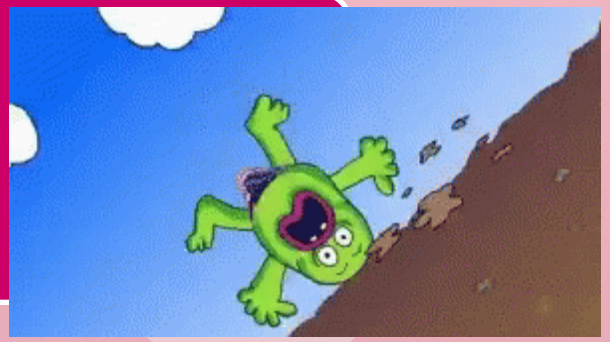

स = सहित; आसादना = विराधना

सम्यक्त्व की विराधना के साथ जो रहे

# सासादन सम्यक्त्व

## परिणाम

अव्यक्त अतत्त्वश्रद्धान

## निमित्त

अनंतानुबंधी क्रोध, मान, माया, लोभ में से किसी एक का उदय

www.JainKosh.org

# सासादन गुणस्थान की प्राप्ति कब होती है?

औपशमिक सम्यक्त्व के काल में

कम से कम 1 समय

ज्यादा से ज्यादा 6 आवली शेष रहने पर

4, 5 या 6 में से किसी भी एक गुणस्थान से गिरने पर

www.JainKosh.org

## सासादन सम्यक्त्व का काल

- 1 समय से 6 आवली

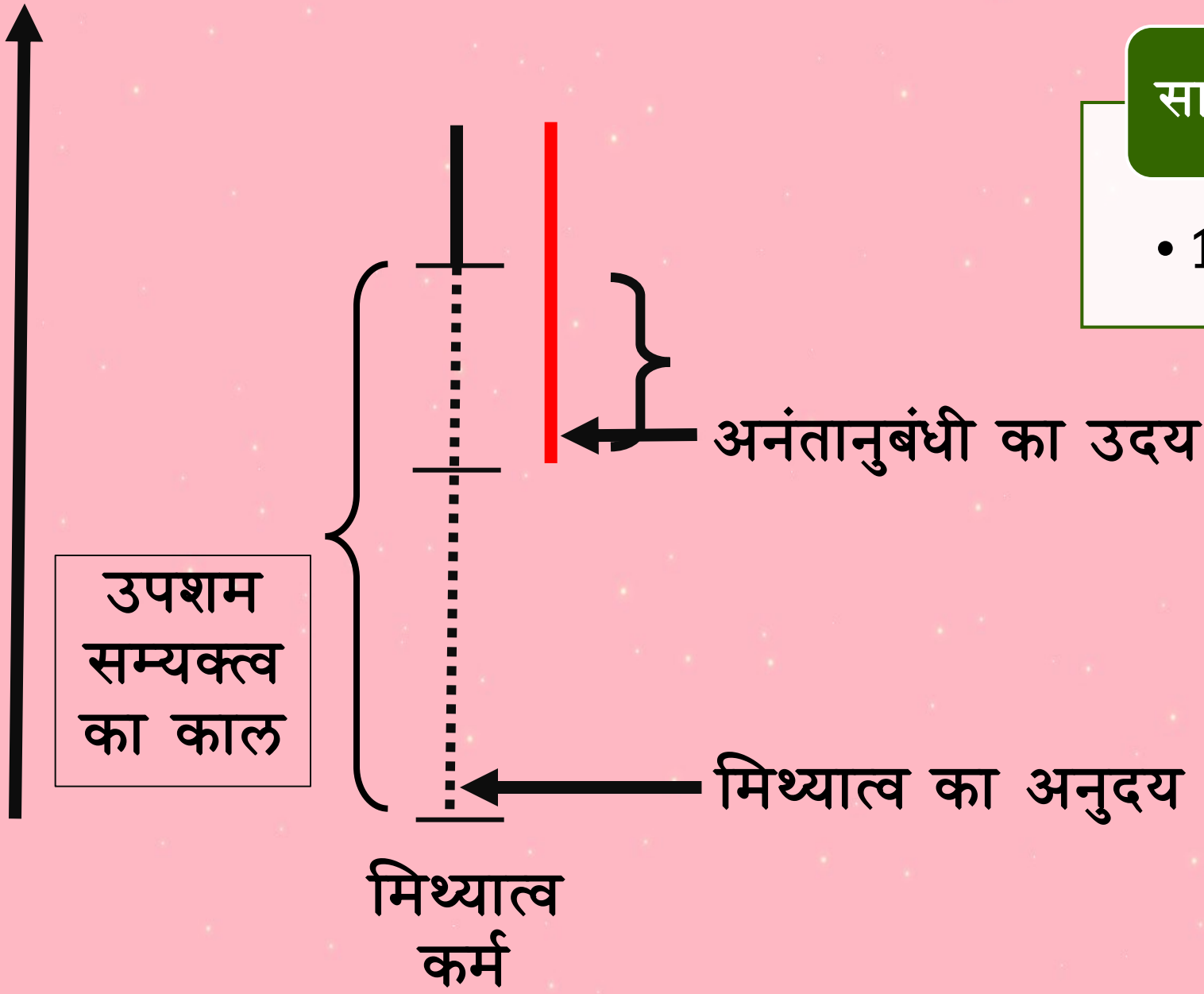


# सासादन सम्यक्त्व

www.JainKosh.org

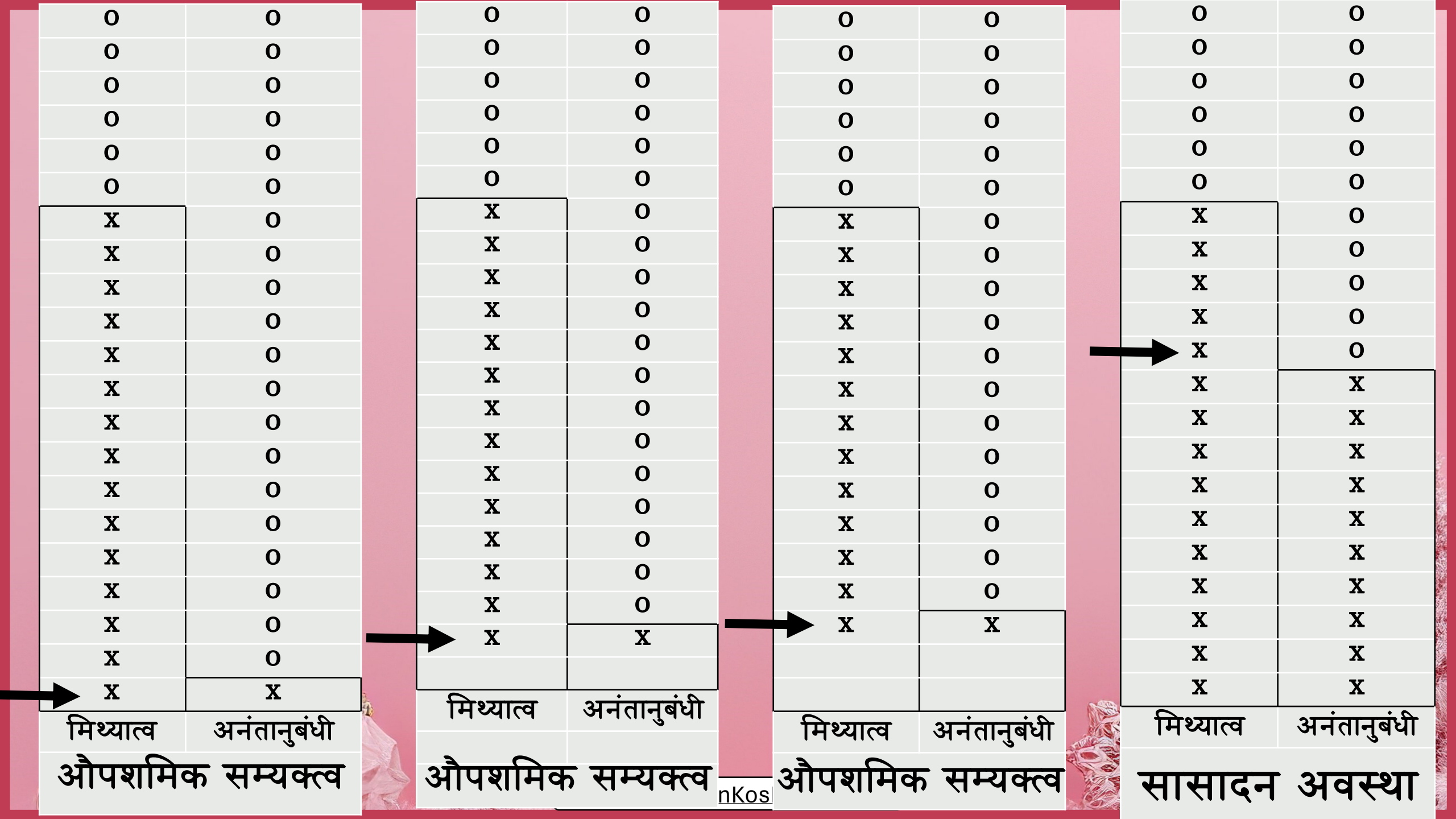
मिथ्यात्व
अनंतानुबंधी
औपशमिक सम्यक्त्व
मिथ्यात्व
अनंतानुबंधी
औपशमिक सम्यक्त्व
nKos
मिथ्यात्व
अनंतानुबंधी
औपशमिक सम्यक्त्व
मिथ्यात्व
अनंतानुबंधी
सासादन अवस्था

# सासादन गुणस्थान सम्बन्धी तथ्य

इस गुणस्थान का काल समाप्त होने पर जीव नियम से मिथ्यात्व में जाता है ।

ये ऊपर से गिरने का ही गुणस्थान है ।

प्रथम गुणस्थान से द्वितीय गुणस्थान की प्राप्ति कभी भी नहीं होती है ।

मात्र उपशम सम्यक्त्वी ही सासादन को प्राप्त होते हैं, शेष सम्यक्त्वी नहीं ।

www.JainKosh.org

# सायारे पट्ठवगो, णिट्ठवगो मज्झिमो य भजणिज्जो ।
# जोगे अण्णदरम्हि दु, जहण्णए तेउलेस्साए ॥101॥

- अन्वयार्थ- (पट्ठवगो) दर्शन-मोहनीय के उपशम का प्रस्थापक जीव (प्रारंभ करने वाला) (सायारे) साकार उपयोग में होता है परन्तु (णिट्ठवगो य मज्झिमो भजणिज्जो) उसका निष्ठापक (समापन करने वाला) और मध्य अवस्थावर्ती जीव भजनीय है अर्थात् साकार या निराकार दोनों में से कोई भी उपयोग हो सकता है और
- वह जीव (जोगे अण्णदरम्हि दु) तीन योगों में से किसी एक योग में विद्यमान होता है और
- (तेउलेस्साए) तेजोलेश्या के (जहण्णए) जघन्य अंश में वर्तमान होता है ॥101॥

www.JainKosh.org

# प्रथमोपशम सम्यक्त्व के प्रस्थापक, निष्ठापक

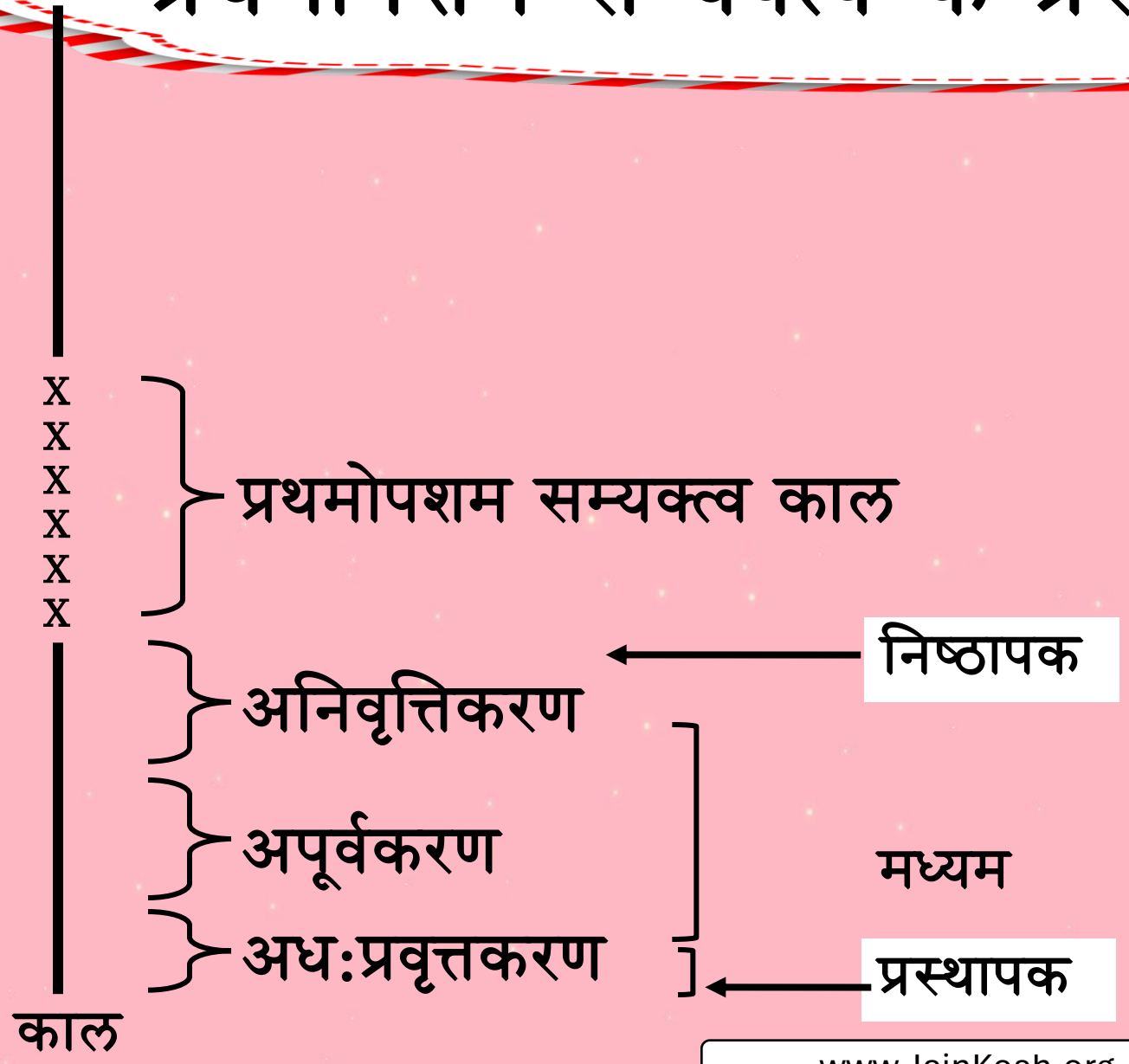


## प्रस्थापक

- प्रथमोपशम सम्यक्त्व के लिये प्रक्रिया प्रारंभ करने वाला ।
- यह अधःप्रवृत्तकरण का प्रथम समय है।

## निष्ठापक

- प्रथमोपशम सम्यक्त्व के लिये प्रक्रिया समाप्त करने वाला ।
- यह अनिवृत्तिकरण का अंतिम समय है।

www.JainKosh.org

# करण के समय संभव उपयोग

उपशम प्रारंभ करने वाला प्रस्थापक जीव साकार उपयोग वाला ही होता है, निराकार उपयोग वाला नहीं । क्योंकि सामान्यग्राही, अविचारस्वरूप दर्शनोपयोग द्वारा विचारस्वरूप तत्त्वार्थ-श्रद्धान के प्रति अभिमुखपना नहीं बन सकता । इसलिए प्रस्थापक को साकार उपयोग ही होता है ।

उसके पश्चात् मध्यम अवस्था में और निष्ठापक अवस्था में साकार अथवा निराकार कोई भी उपयोग हो सकता है । एक बार में संसारी जीव को एक ही उपयोग होता है । यह उपयोग भी अधिकतम अंतर्मुहूर्त काल रहता है । पश्चात् दूसरा उपयोग होता ही है । इसलिए मध्यम और निष्ठापक काल में साकार या निराकार उपयोग होता है ।

# करण के समय संभव योग

उपशम विधि का प्रारंभक (प्रस्थापक) तीनों योगों में से कोई एक योग वाला होता है ।

किसी भी योग का प्रारंभ, मध्य या अंत अवस्था में विरोध नहीं है ।

www.JainKosh.org

# करण के समय संभव लेश्या

## मनुष्य और तिर्यंचगति में

- प्रस्थापक के मंद भी विशुद्धि हो, तब भी कम से कम जघन्य पीत लेश्या तो होती ही है । इससे अधिक भी मध्यम पीत अथवा पद्म, शुक्ल लेश्या हो सकती है, परंतु जघन्य विशुद्धि हो तो जघन्य पीत लेश्या होती है ।

## नरकों में

- अशुभ ही लेश्या होती है । वहाँ कषायों के मंद अनुभाग का उदय होता है, जिससे परिणामों की विशेष विशुद्धि होती है, जो तत्त्वार्थश्रद्धान के अनुरूप होती है ।

## देवों में

- नियम से शुभ लेश्या ही होती है । वहाँ वे अपनी-अपनी लेश्याओं में प्रथमोपशम सम्यक्त्व की विधि प्रारंभ करते हैं ।

www.JainKosh.org

# अंतोमुहुत्तमद्धं, सव्वोवसमेण होदि उवसंतो ।
# तेण परमुदओ खलु, तिण्णेक्कदरस्स कम्मस्स ॥102॥

- अन्वयार्थ- (अंतोमुहुत्तमद्धं) अंतर्मुहूर्त काल पर्यंत (सव्वोवसमेण) सभी दर्शन-मोहनीय के उपशम से (उवसंतो) उपशांत अर्थात् उपशम सम्यग्दृष्टि (होदि) होता है।
- (तेण परं) उसके अनन्तर (खलु) निश्चय से (तिण्णेक्कदरस्स कम्मस्स) दर्शन-मोहनीय की तीन प्रकृतियों में से किसी एक प्रकृति का (उदओ) उदय होता है ॥102॥

www.JainKosh.org

# प्रथमोपशम सम्यक्त्व पश्चात् उदय-योग्य कर्म विशेष

दर्शन मोहनीय के सर्व-उपशम से

अंतर्मुहूर्त काल के लिए

जीव, औपशमिक सम्यग्दृष्टि होता है ।

उसके पश्चात् नियम से दर्शन मोहनीय की तीन में से किसी एक प्रकृति का उदय होता है ।

# औपशमिक सम्यक्त्व से जाने के 4 मार्ग

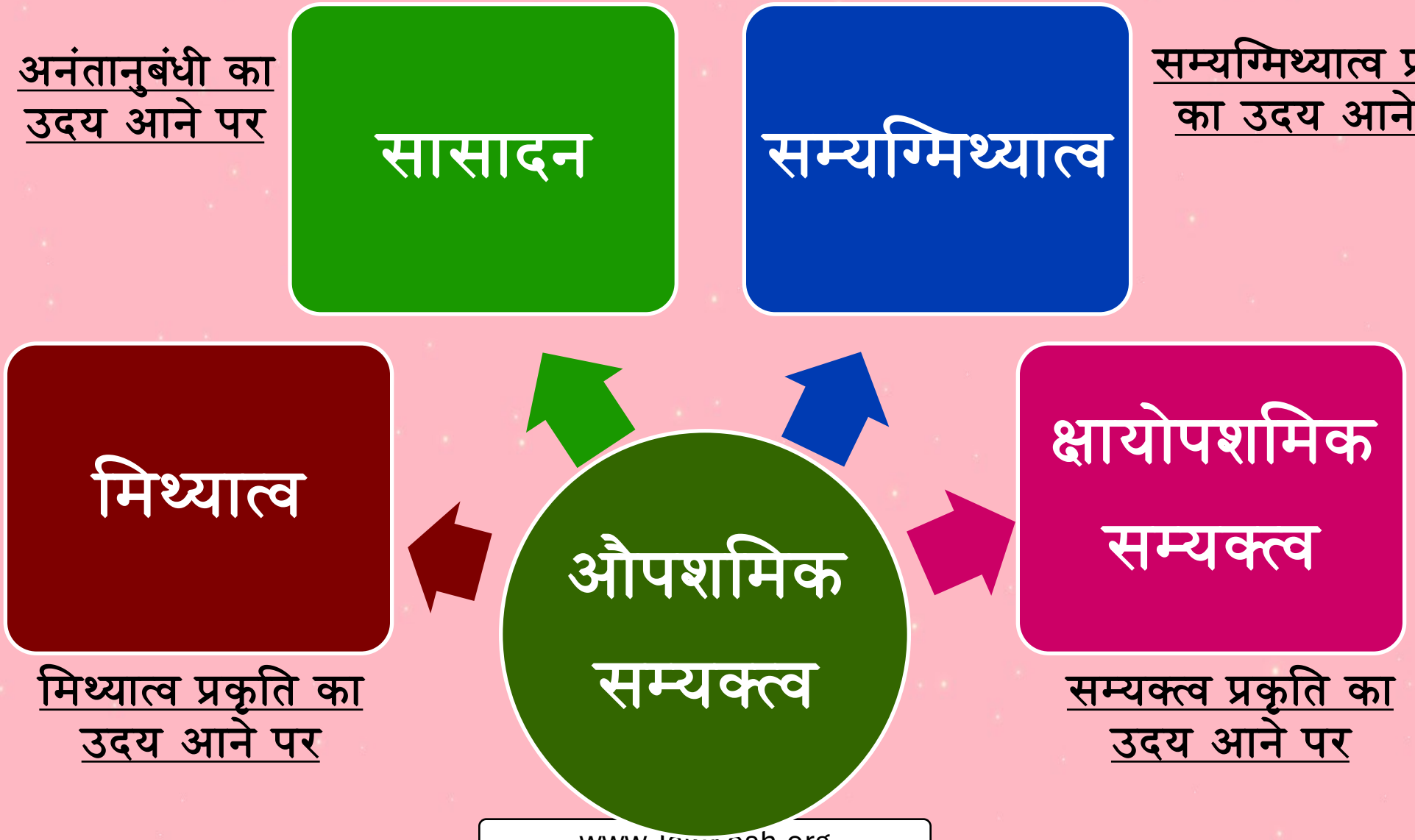


www.JainKosh.org

# दर्शन मोहनीय कर्म की स्थिति

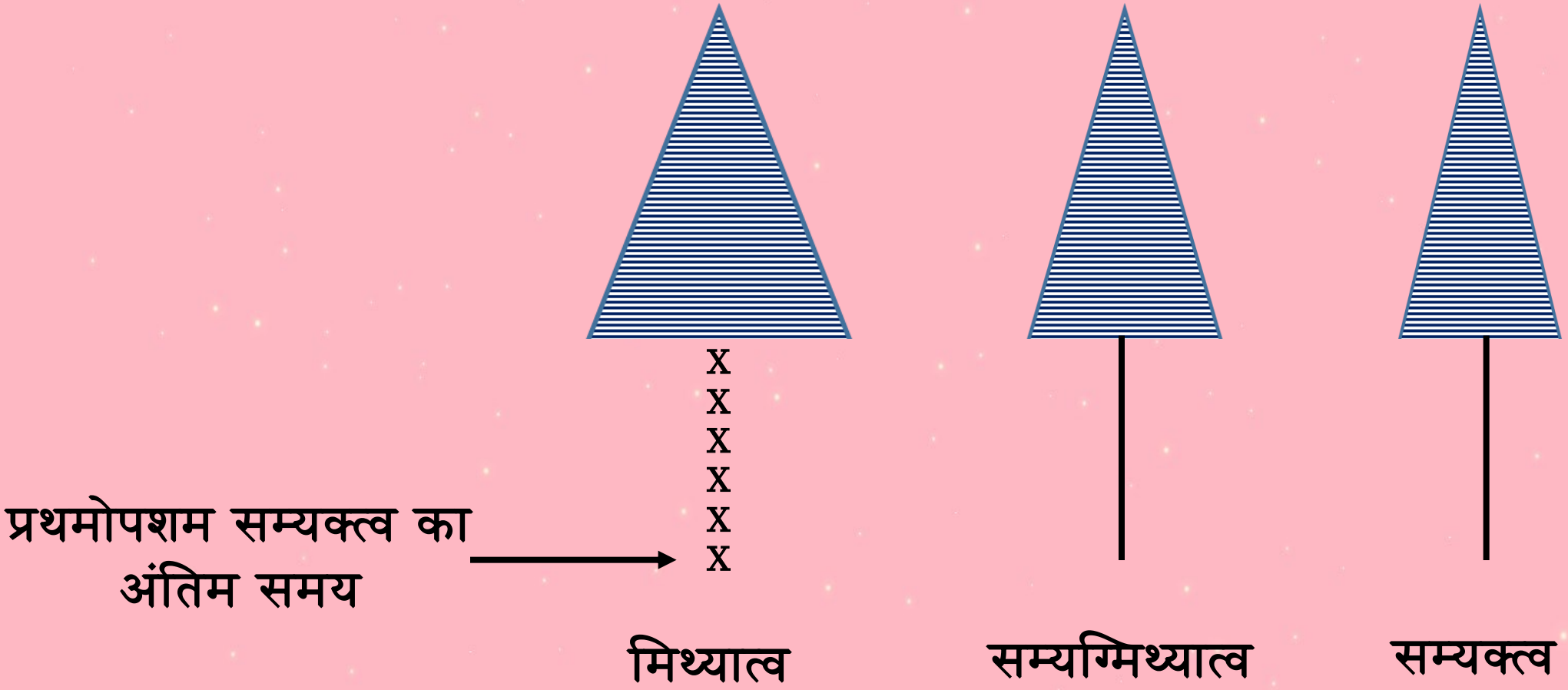


www.JainKosh.org

# उवसमसम्मत्तुवरिं, दंसणमोहंतरं तु पूरेदि ।
# उदयिल्लस्सुदयादो, सेसाणं उदयबाहिरदो ॥103॥

- अन्वयार्थ- (उवसमसम्मत्तुवरिं) उपशम सम्यक्त्व का काल समाप्त होने के अनन्तर (दंसणमोहंतरं तु) दर्शन-मोह के अन्तरायाम को (पूरेदि) भरता है।
- (उदयिल्लस्सुदयादो) उदययुक्त प्रकृतियों का द्रव्य उदय-निषेक से देता है।
- (सेसाणं) शेष (अनुदयरूप दो) प्रकृतियों का द्रव्य (उदयबाहिरदो) उदयावली के बाहर देता है ॥103॥

www.JainKosh.org

# अंतरायाम में द्रव्य-पूरण

जिस प्रकृति का उदय होता है, उसमें उदयावली से अर्थात् वर्तमान निषेक से लेकर ऊपर तक द्रव्य दिया जाता है ।

यदि उदय-निषेक से ही द्रव्य नहीं दिया जायेगा, तो विवक्षित कर्म का उदय ही कैसे होगा । चूंकि यहाँ 1 प्रकृति का उदय है, अत: उदय हेतु उदयावली में द्रव्य का सिंचन किया जाता है ।

जिसका उदय नहीं है, ऐसी शेष 2 प्रकृतियों का भी अंतरायाम भरा जाता है । परंतु इनका वर्तमान समय में उदय नहीं है, तो इनका द्रव्य उदयावली में ना आकर, उदयावली के ऊपर से निक्षिप्त किया जाता है । क्योंकि जिसका उदय होता है, उसी की उदीरणा होती है – ऐसा नियम है ।

प्रथमोपशम सम्यक्त्व का काल बीतने पर भी अभी अंतरायाम शेष है क्योंकि प्रथमोपशम सम्यक्त्व के काल से अंतरायाम संख्यात गुणा बड़ा है ।

तथापि इस अंतरायाम के काल में प्रथमोपशम सम्यक्त्व नहीं रहता क्योंकि उसका काल इतना ही है ।

उस काल के पश्चात् दर्शनमोह की 3 प्रकृतियों में से एक का उदय आना अनिवार्य है।

उदय आने के लिए कर्म के प्रदेश होने चाहिए, परंतु यहाँ तो अंतरायाम ही है । तब अंतरायाम में कर्म के निषेक निक्षिप्त किये जाते हैं, अंतरायाम को पूरा जाता है ।

# अंतर-पूरण के पूर्व कर्म स्थिति

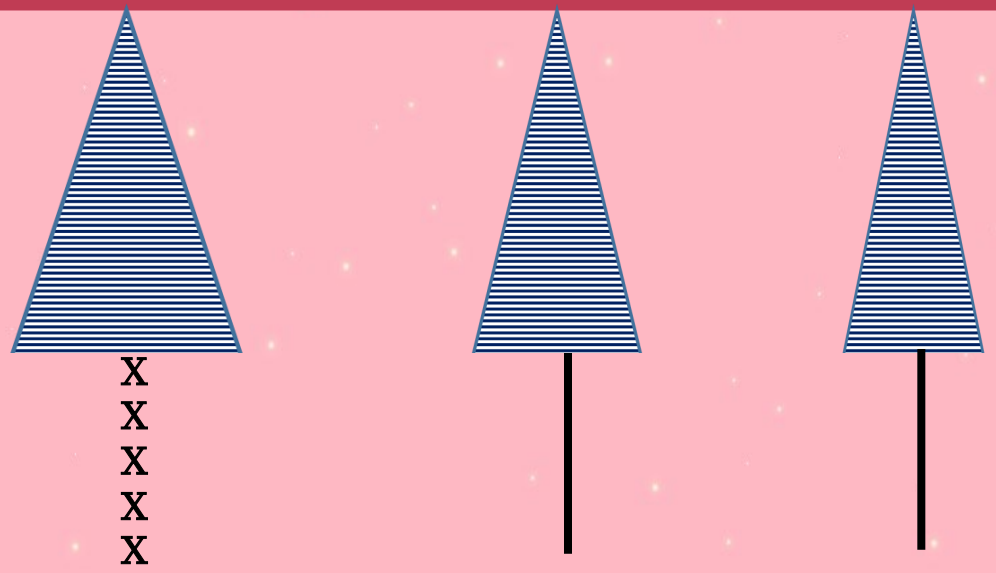


मिथ्यात्व

सम्यग्मिथ्यात्व

सम्यक्त्व

# अंतर-पूरण के पश्चात् कर्म स्थिति

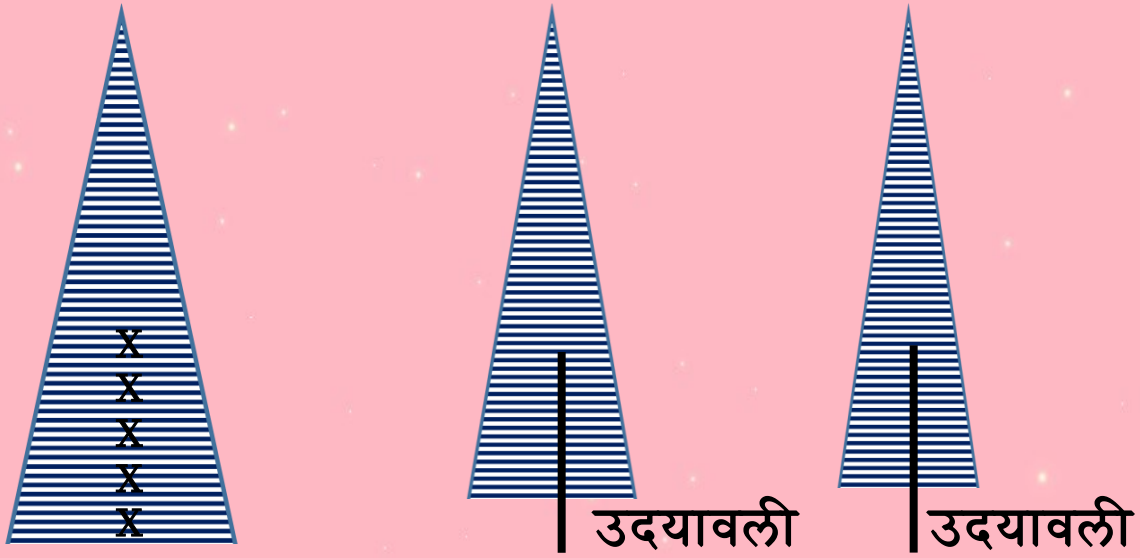


उदयवाली प्रकृति

अनुदय वाली प्रकृति

www.JainKosh.org

# ओक्कट्ठिदइगिभागं, समपट्टीए विसेसहीणकमं । सेसासंखाभागे, विसेसहीणेण खिवदि सव्वत्थ ॥104॥

- अन्वयार्थ- (ओक्कट्ठिदइगिभागं) अपकृष्ट द्रव्य का एक भाग (समपट्टीए) समपट्टिकारूप से (विसेसहीणकमं) विशेष (चय) हीनक्रम से (खिवदि) (उदयावली में) देता है।
- (सेसासंखाभागे) शेष रहा असंख्यात बहुभाग (सव्वत्थ) सर्वत्र (विसेसहीणेण) चयहीन क्रम से (खिवदि) देता है ॥104॥

www.JainKosh.org

# अपकृष्ट द्रव्य का विभाग

## अपकृष्ट द्रव्य

$$\frac{\text{सत्त्व द्रव्य}}{\text{ओ}}$$

जिस प्रकृति का उदय है, उसके द्रव्य में अपकर्षण भागहार का भाग देकर एक भाग प्रमाण अपकृष्ट द्रव्य आता है।

$$\frac{\text{अपकृष्ट द्रव्य}}{\text{असंख्यात लोक}}$$

$$\frac{\text{अपकृष्ट द्रव्य}}{\text{असंख्यात लोक}} \times (\text{असंख्यात लोक} - 1)$$

उसे उदयावली, उदयावली के ऊपर अंतरायाम एवं अंतरायाम के ऊपर द्वितीय स्थिति – ऐसे तीन स्थानों पर बांटा जाता है ।

एकभाग द्रव्य,

उदयावली हेतु

बहुभाग द्रव्य,

अंतरायाम एवं द्वितीय स्थिति हेतु

www.JainKosh.org

# उदयावली में द्रव्य देने का विधान

उदाहरण - मानाकि अपकृष्ट द्रव्य = 6204, उदयावली में देय = 416,
अंतरायाम व द्वितीय स्थिति में देय = 5788, आवली = 4 समय

| सूत्र | अंक संदृष्टि |
|---|---|
| मध्यमधन $= \frac{\text{सर्वद्रव्य}}{\text{गच्छ}}$ | $\frac{416}{4} = 104$ |
| चय $= \frac{\text{मध्यमधन}}{\text{दो गुणहानि} - \frac{\text{गच्छ}-1}{2}}$ | $\frac{104}{8-\frac{4-1}{2}} = \frac{104}{8-\frac{3}{2}} = \frac{104}{6.5} = 16$ |
| प्रथम निषेक = चय × दो गुणहानि | 16 × 8 = 128 |
| द्वितीयादि निषेक = | 112, 96, 80 |

# अंतरायाम में द्रव्य देने का विधान

1) समपट्टिका द्रव्य

- द्वितीय स्थिति के प्रथम निषेक का जितना प्रमाण है, उतना द्रव्य नीचे अंतरायाम के प्रत्येक निषेक को दिया जाता है । इसे समपट्टिका द्रव्य कहते हैं ।

2) चयहीन द्रव्य

- द्वितीय स्थिति के प्रथम निषेक में जो चय का प्रमाण है, उससे दुगुणा चय उसके नीचे की अंतरायाम स्थिति में होगा । यह चय अंतरायाम के प्रथम निषेक से एक-एक चय घटते-घटते अंतिम निषेक में एक चय मात्र दिया जायेगा ।

ऐसे पूर्वोक्त दो द्रव्य अंतरायाम में देने से अंतरायाम का द्रव्य भी द्वितीय स्थिति के गोपुच्छाकार हो जायेगा ।

यह दोनों द्रव्य अपकृष्ट द्रव्य से लेकर अंतरायाम में निक्षिप्त किये जायेंगे ।

इसके पश्चात् भी अपकृष्ट द्रव्य शेष रहता है । उसे अंतरायाम से लेकर ऊपर द्वितीय स्थिति तक चयहीन क्रम से निक्षिप्त किया जाता है ।

इस प्रकार अंतरायाम को पूरा जाता है तथा उदयावली में द्रव्य देकर उदय भी प्रारंभ होता है ।

# अपकृष्ट द्रव्य कहाँ-कहाँ दिया जाता है?

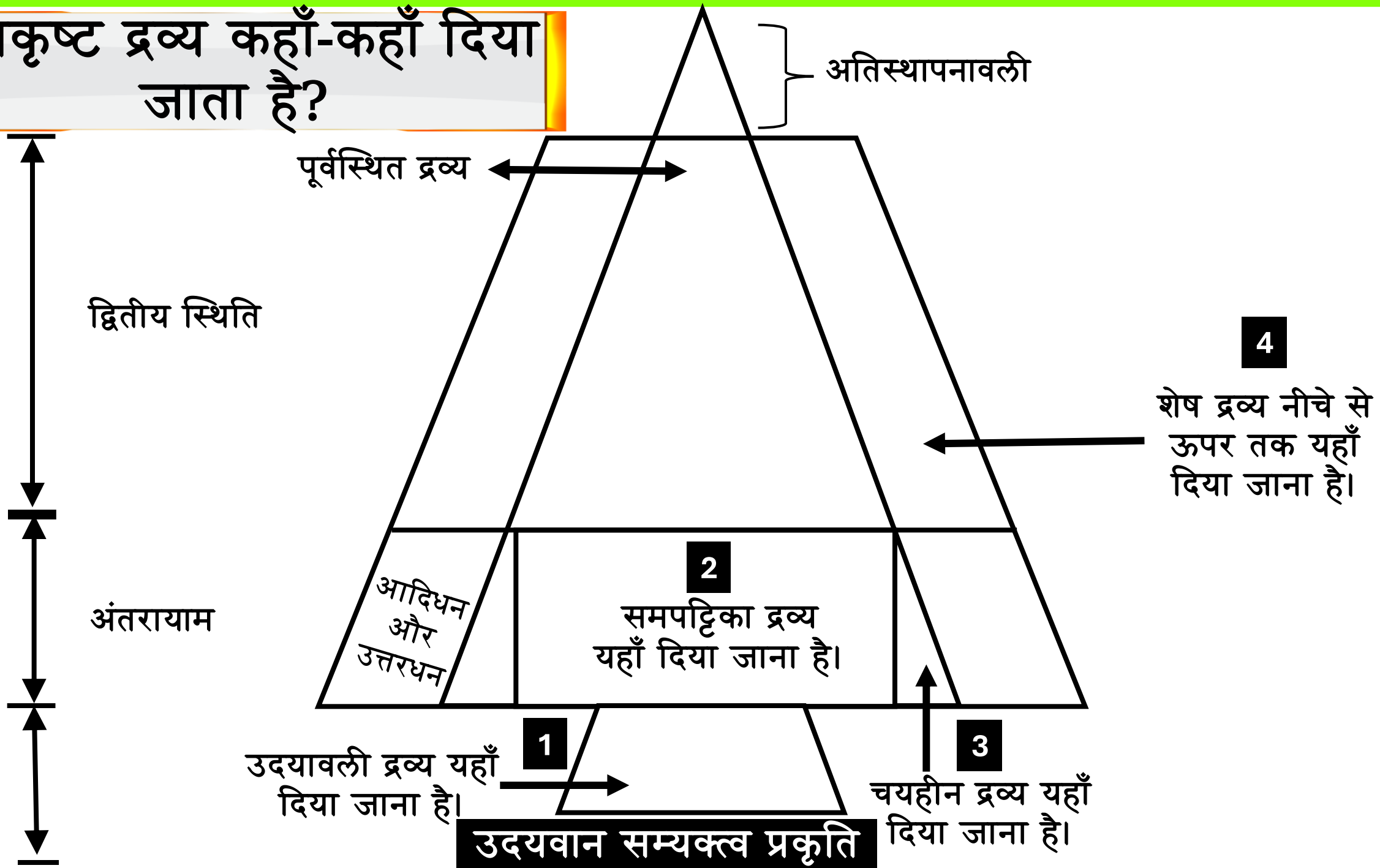

## मानाकि द्वितीय स्थिति का प्रथम निषेक = 256, अंतरायाम का प्रमाण = 4 समय

- तब समपट्टिका द्रव्य = 256 × 4 = 1024 क्योंकि प्रथम निषेक प्रमाण द्रव्य अंतरायाम के प्रत्येक समय में देना है ।
- द्वितीय स्थिति की प्रथम गुणहानि का चय = 16, तब अंतरायाम की गुणहानि का चय = 16 × 2 = 32
- अंतरायाम के सभी निषेकों में चय देना है । अत: चयधन
- = $\frac{\text{गच्छ}+1}{2}$ × गच्छ × चय = $\frac{(4+1)}{2}$ × 4 × 32
- = 5 × 2 × 32 = 320
- समपट्टिका द्रव्य + चयधन = 1024 + 320 = 1344 द्रव्य
- इतना द्रव्य बहुभाग द्रव्य 5788 से ग्रहण करके दिया ।
- शेष अपकृष्ट द्रव्य = 5788 – 1344 = 4444 रहा ।
- इस 4444 द्रव्य में से 1344 द्रव्य पुनः अंतरायाम में दिया ।
- शेष (4444 – 1344 = 3100) द्रव्य द्वितीय स्थिति में चयहीन क्रम से दिया जायेगा ।

# द्वितीय स्थिति में देय द्रव्य का विधान

उदय के अयोग्य शेष 2 प्रकृतियों का द्रव्य उदयावली बाह्य अंतरायाम में तथा द्वितीय स्थिति में देता है ।

देने का विधान पूर्वोक्तवत् ही जानना ।

## प्रथम निषेक

- $\frac{\text{सर्व द्रव्य}}{\text{साधिक } \frac{3}{2} \text{ गुणहानि}} = \frac{3100}{12\frac{14}{128}} = 256$

## चय

- $\frac{\text{प्रथम निषेक}}{\text{दो गुणहानि}} = \frac{256}{16} = 16$

इस चय प्रमाण से एक-एक चय घटते-घटते द्वितीयादि निषेकों में द्रव्य दिया जाता है ।

www.JainKosh.org

# अंतरायाम पूर्ण भरने की रचना

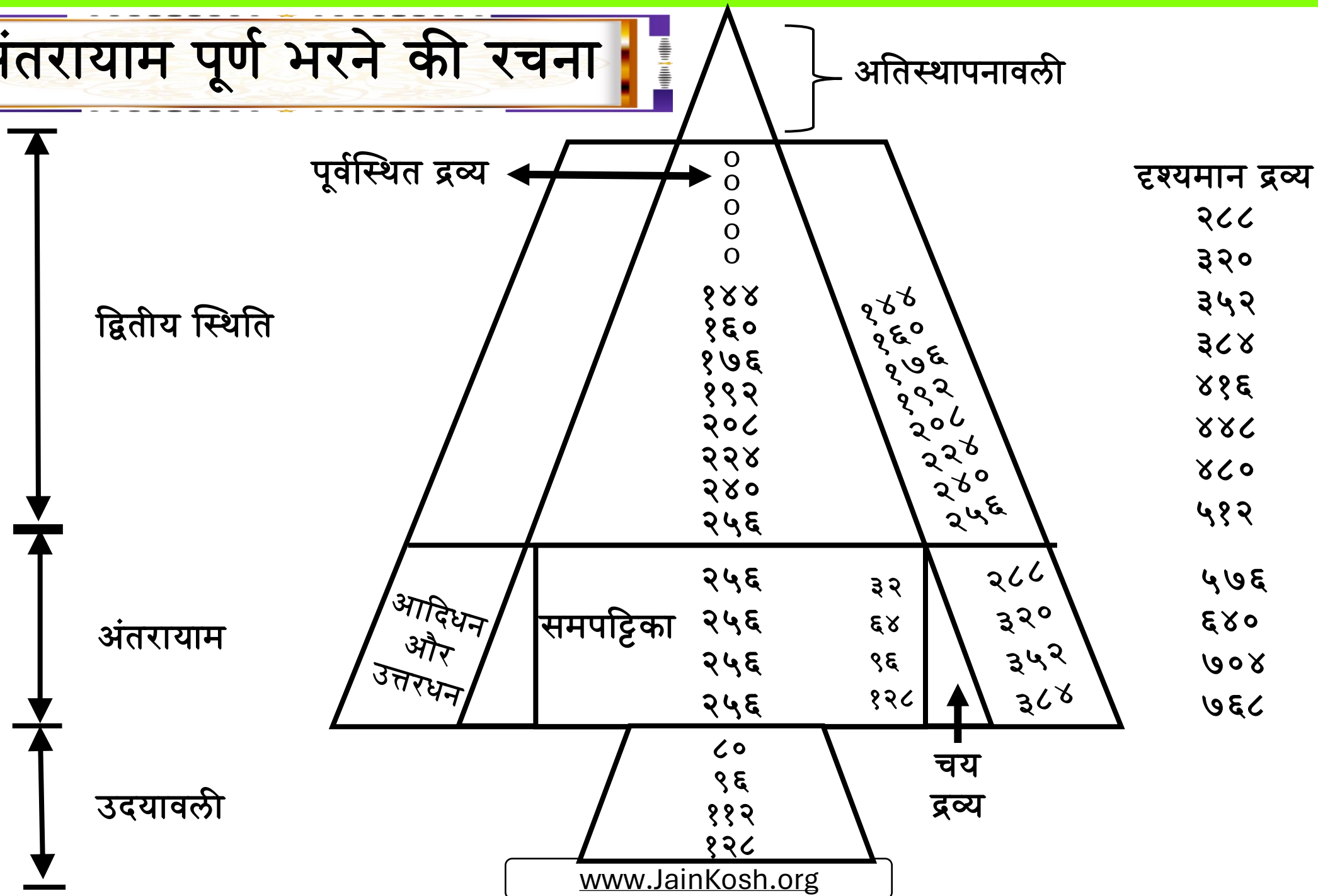


www.JainKosh.org

# अर्थ संदृष्टि

सम्यक्त्व प्रकृति का द्रव्य = $\frac{\text{स } \partial \text{ १२ –}}{\text{७ ख १७ । गु}}$ (मिथ्यात्व के द्रव्य का असंख्यातवाँ भाग)

आगे इसे ‘सम्यक्त्व द्रव्य’ – इस रूप में लिखेंगे ।

अपकृष्ट द्रव्य = $\frac{\text{सम्यक्त्व द्रव्य}}{\text{ओ}}$

इसे असंख्यात लोक से भाग देकर, एक भाग उदयावली में देय द्रव्य = $\frac{\text{सम्यक्त्व द्रव्य}}{\text{ओ} \times \equiv \partial}$

शेष बहुभाग द्रव्य = $\frac{\text{सम्यक्त्व द्रव्य} \times (\equiv \partial - 1)}{\text{ओ} \times \equiv \partial}$

इस द्रव्य में गुणकार में एक कम को गौण करने पर, $\equiv \partial$ संख्या का अपवर्तन कर दिया, तो शेष द्रव्य लगभग = $\frac{\text{सम्यक्त्व द्रव्य}}{\text{ओ}}$

# समपट्टिका द्रव्य

अब द्वितीय स्थिति में स्थित द्रव्य = स ∂ १२ –
७ ख १७ | गु

(अपकृष्ट किया द्रव्य गौण किया)

द्वितीय स्थिति का प्रथम निषेक = $\frac{\text{सत्त्व द्रव्य}}{\frac{3}{2}\text{ गुणहानि}}$ = $\frac{\text{सम्यक्त्व द्रव्य}}{\text{१२}}$

यह प्रथम निषेक है। इतना द्रव्य अंतरायाम के प्रत्येक निषेक में देना है। अंतरायाम अंतर्मुहूर्त प्रमाण याने संख्यात आवली प्रमाण है। तो समपट्टिका द्रव्य = प्रथम निषेक × अंतरायाम

$\frac{\text{सम्यक्त्व द्रव्य}}{\text{१२}}$ × 2 ॠ

# अंतरायाम संबंधी गुणहानि का चयधन

अधस्तन गुणहानि का प्रथम निषेक

= द्वितीय स्थिति का प्रथम निषेक × 2

$= \frac{\text{सम्यक्त्व द्रव्य}}{१२} \times 2$

अधस्तन गुणहानि का चय

$= \frac{\text{प्रथम निषेक}}{2\ \text{गुणहानि}} = \frac{\text{सम्यक्त्व द्रव्य} \times 2}{\text{गच्छ} \times (\text{गच्छ} + 1)}$

अंतरायाम का चयधन

$= \frac{\text{गच्छ} \times (\text{गच्छ} + 1)}{2} \times \text{चय}$

$= \frac{2\,[illegible] \times (2\,[illegible] + 1)}{2} \times \frac{\text{सम्यक्त्व द्रव्य}}{१२ \times १६} \times 2$

# कुल द्रव्य

- इस चयधन को समपट्टिका द्रव्य में जोड़ने पर समपट्टिका द्रव्य से कुछ अधिक द्रव्य होता है । अधिक बताने हेतु '+' की संदृष्टि करी ।
- अंतरायाम में देय द्रव्य = $\frac{\text{सम्यक्त्व द्रव्य}}{१२}$ × 2 २+
- इसे अपकृष्ट द्रव्य में से घटाकर शेष अपकृष्ट द्रव्य में से पुनः अंतरायाम में देय द्रव्य निकालें ।
- तब द्वितीय स्थिति में देय द्रव्य
- = $\frac{\text{सम्यक्त्व द्रव्य}}{\text{ओ}}$ = (दो बार '-' की संदृष्टि करी है क्योंकि इसमें से दो राशियाँ घटाई हैं ।)
- इस शेष द्रव्य को द्वितीय स्थिति के प्रथम निषेक से लेकर ऊपर अतिस्थापनावली छोड़कर सर्व निषेकों में दिया जाता है । इस प्रकार द्रव्य के निक्षेप से उदयावली के ऊपर सर्वत्र एक गोपुच्छाकार सत्त्व हो जाता है ।
- शेष दो प्रकृति मिथ्यात्व और मिश्र का अनुदय होने से उनका द्रव्य उदयावली में नहीं दिया जाता, मात्र अंतरायाम में एवं द्वितीय स्थिति में दिया जाता है ।
- यह सब अंतरायाम का पूरना एक समय में ही हो जाता है ।

www.JainKosh.org

# सम्मुदये चलमलिणमगाढं सद्दहदि तच्चयं अत्थं । सद्दहदि असब्भावं, अजाणमाणो गुरुणियोगा ॥105॥

- अन्वयार्थ- (सम्मुदये) सम्यक्त्व प्रकृति का उदय होने पर (जीव) (तच्चयं अत्थं) तत्त्व और अर्थ का अथवा तत्त्वार्थ का (चलमलिणमगाढं) चल, मलिन और अगाढ़रूप से (सद्दहदि) श्रद्धान करता है।
- (अजाणमाणो) स्वयं न जानने वाला वेदक सम्यग्दृष्टि (गुरूणियोगा) गुरुओं के निमित्त से (असब्भावं) असत् भाव का भी (सद्दहदि) श्रद्धान करता है ॥105॥

www.JainKosh.org

# सम्यक्त्व प्रकृति का कार्य - सम्यक्त्व में दोष

## चल

जल की तरंगों की तरह चंचल

आप्त, आगम, पदार्थों के विषय में चंचलपना

## मल

बाह्य मल से सहित शुद्ध सोना

शंकादि मल सहित सम्यक्त्व

## अगाढ़

वृद्ध के हाथ की लाठी

आप्तादि की प्रतीति में शिथिलता

www.JainKosh.org

क्या सम्यग्दृष्टि अतत्त्वार्थ का श्रद्धान भी कर लेता है ?

हाँ । परंतु कैसे ?

स्वयं विशेष नहीं जानता हुआ,

गुरु के वचनों की अकुशलता से,

दुष्ट अभिप्राय से

ग्रहण किये तत्त्व का विस्मरण होने से आदि कारणों से

तत्त्वार्थ का असत्रूप श्रद्धान कर लेता है ।

www.JainKosh.org

# सुत्तादो तं सम्मं, दरिसिज्जंतं जदा ण सद्दहदि ।
# सो चेव हवदि मिच्छाइट्ठी जीवो तदो पहुदि ॥106॥

- अन्वयार्थ- (सुत्तादो) सूत्र के द्वारा (सम्मं दरिसिज्जंतं) सम्यक्रूप से दिखाये गये (तं) तत्त्वार्थ का (जदा) यदि वह (ण सद्दहदि) श्रद्धान नहीं करता है तो (सो चेव) वही (जीवो) जीव (तदो पहुदी) उस समय से (मिच्छाइट्ठी) मिथ्यादृष्टि (हवदि) होता है ॥106॥

www.JainKosh.org

तब क्या वह मिथ्यादृष्टि हो जाता है ?

नहीं, 'सर्वत्र भगवान की ऐसी ही आज्ञा (उपदेश) है' – ऐसा मानता हुआ सम्यग्दृष्टि है ।

तथापि कभी कोई अन्य आचार्य आदि

उस विषय में गणधरादि कथित सम्यक् सूत्र (आगम) बतायें,

फिर भी वह उनका सम्यक् श्रद्धान ना करे,

तो तब से वही जीव मिथ्यादृष्टि हो जाता है ।

क्योंकि उसे आप्त-कथित सूत्रार्थ का श्रद्धान नहीं है ।

# मिस्सुदये सम्मिस्सं, दहिगुडमिस्सं व तच्चमियरेण । सद्दहदि एक्कसमये, मरणे मिच्छो व अयदो वा ॥107॥

- अन्वयार्थ- (मिस्सुदये) मिश्र प्रकृति का उदय होने पर (दहिगुडमिस्सं व) दही व गुड़ के मिश्रित स्वाद के समान (इयरेण तच्चं) इतर अर्थात् अतत्त्व से सहित तत्त्व का (सम्मिस्सं) सम्मिश्ररूप से (एक्क समये) एक ही समय में (सद्दहदि) श्रद्धान करता है ।
- (मरणे) मरण समय में (मिच्छो व) मिथ्यादृष्टि अथवा (अयदो वा) असंयत सम्यग्दृष्टि होता है ॥107॥

www.JainKosh.org

# मिश्र गुणस्थान

| निमित्त | परिणाम | उदाहरण |
| --- | --- | --- |
| सम्यग्मिथ्यात्व कर्म का उदय | मिश्र | गुड़-मिश्रित दही का स्वाद |
| जात्यंतर सर्वघाति प्रकृति | सम्यक् भी, मिथ्या भी | न सिर्फ खट्टा, न सिर्फ मीठा, इसीलिए खट्टा-मीठा |

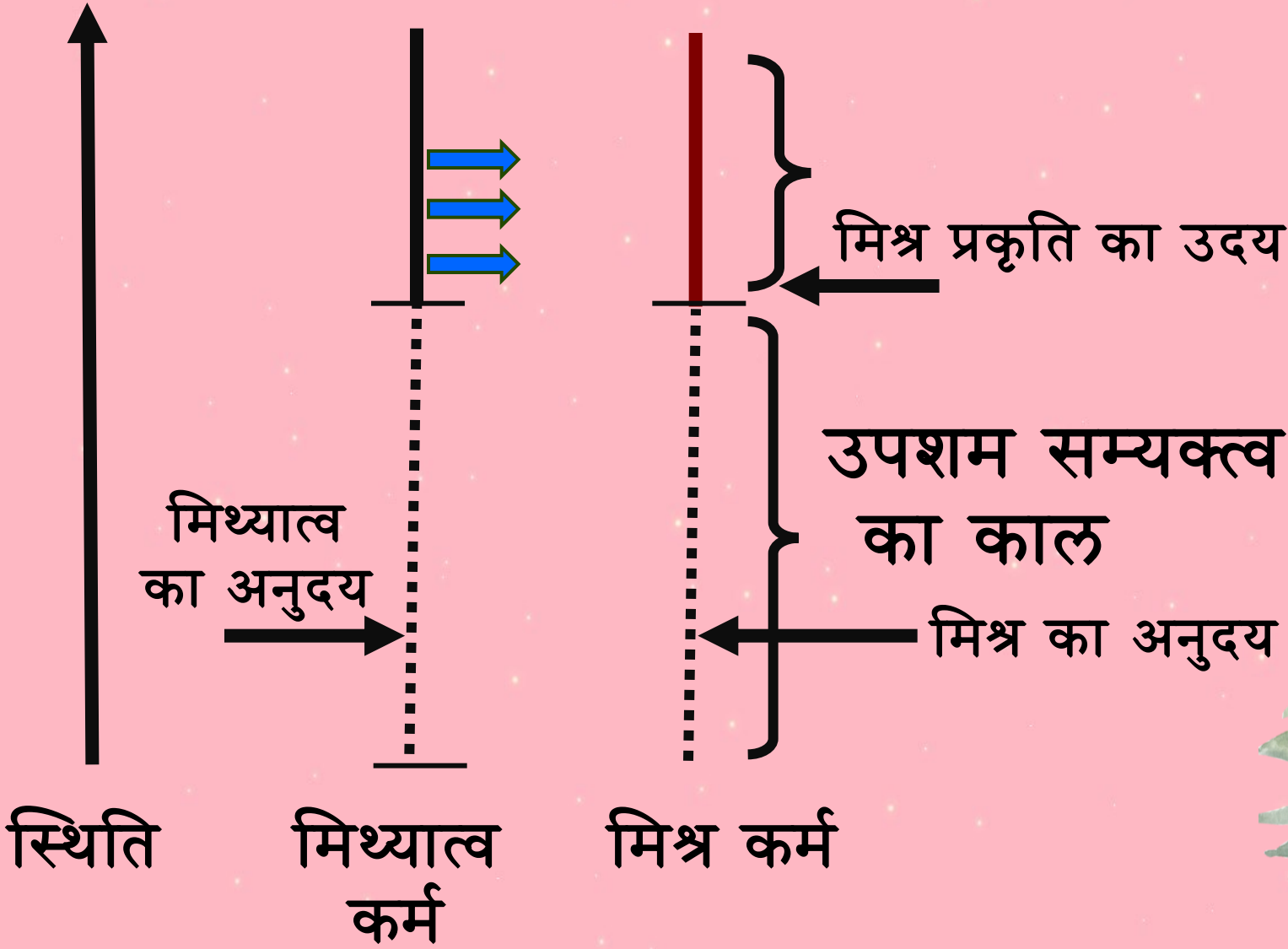


# मिश्र गुणस्थान का काल

www.JainKosh.org

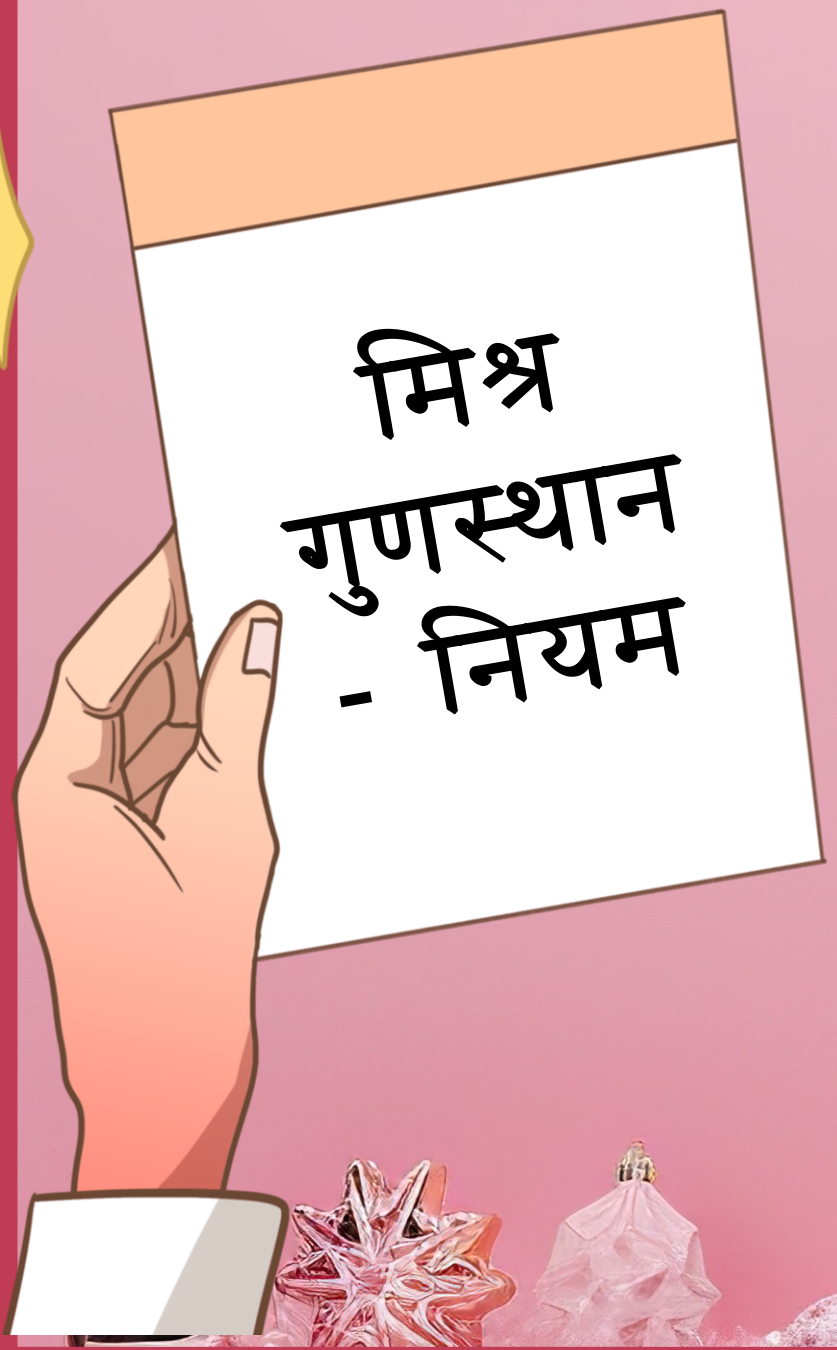


मिश्र गुणस्थान से सकल-संयम अथवा देश-संयम को ग्रहण नहीं करता ।

उपशम सम्यक्त्व अथवा क्षयोपशम सम्यक्त्व से मिश्र गुणस्थान में आता है ।

अथवा मिथ्यादृष्टि जीव मिश्र गुणस्थान को प्राप्त करता है।

इस गुणस्थान में आयु नहीं बांधता है ।

इस गुणस्थान में मरण नहीं होता है ।

यहाँ मारणान्तिक समुद्घात नहीं होता है ।

www.JainKosh.org

मिच्छत्तं वेदंतो, जीवो विवरीयदंसणं होदि ।
ण य धम्मं रोचेदि हु, महुरं खु रसं जहा जुरिदो ॥108॥

- अन्वयार्थ- (मिच्छत्तं वेदंतो जीवो) मिथ्यात्व का वेदन करने वाला जीव (विवरीयदंसणं) विपरीत श्रद्धान वाला (होदि) होता है।
- (य) और (जहा) जिस प्रकार (जुरिदो) ज्वर से पीड़ित व्यक्ति को (खु) निश्चय से (महुरं रसं) मधुर रस (ण रोचेदि) अच्छा नहीं लगता है उसी प्रकार उसे (धम्मं) धर्म (ण रोचेदि) अच्छा नहीं लगता है ॥108॥

www.JainKosh.org

# उदाहरण

जैसे

पित्तज्वर से युक्त

जीव को

मीठा रस भी

कड़वा लगता है

# सिद्धांत

वैसे

मिथ्यात्व से युक्त

जीव को

मधुर धर्म

नहीं रुचता है ।

www.JainKosh.org

# धर्म

ॐ

वस्तु स्वभाव

दयामूल

अनेकांतात्मक

रत्नत्रयात्मक

www.JainKosh.org

# मिच्छाइट्ठी जीवो, उवइट्ठं पवयणं ण सद्दहदि ।
# सद्दहदि असब्भावं, उवइट्ठं वा अणुवइट्ठं ॥109॥

- अन्वयार्थ- (मिच्छाइट्ठी जीवो) मिथ्यादृष्टि जीव (उवइट्ठं पवयणं) (सर्वज्ञ भगवान द्वारा) कहे गये प्रवचन का (ण सद्दहदि) श्रद्धान नहीं करता है। (उवइट्ठं वा अणुवइट्ठं) दूसरों के द्वारा उपदिष्ट अथवा अनुपदिष्ट (असब्भावं) असत् भाव का (सद्दहदि) श्रद्धान करता है ॥109॥

www.JainKosh.org

# मिथ्यादृष्टि के बाह्य चिह्न

## उपदिष्ट (उपदेशित)

- अरहंत के वचनों पर श्रद्धा नहीं करता है।
- कुदेवादि के मिथ्या वचनों पर श्रद्धा करता है।

## अनुपदिष्ट (बिना उपदेशित)

- मिथ्या वचनों पर श्रद्धा करता है।

# मिथ्यात्व के प्रकार

- अगृहीत
  - दर्शन
  - ज्ञान
  - चारित्र
- गृहीत
  - दर्शन
  - ज्ञान
  - चारित्र

# अगृहीत मिथ्यात्व

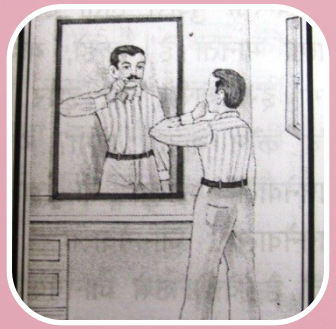

अ + गृहीत = नया नहीं ग्रहण किया

अर्थात् इस भव में जो विपरीत मान्यता नयी ग्रहण नहीं की,

अनादि से बिना ग्रहण किये चली आ रही विपरीत मान्यता

# गृहीत मिथ्यात्व

गृहीत = नया ग्रहण किया

अर्थात् जो अन्य के उपदेश से ग्रहण किया है

www.JainKosh.org

- Reference : श्री लब्धिसार टीकासहित अनुवाद – ब्र. सुजाता रोटे, बाहुबली (वर्तमान में आर्यिका श्री शुद्धोहंश्री माताजी)

- For updates / feedback / suggestions, please contact
  - Sarika Jain, sarikam.j@gmail.com
  - www.jainkosh.org
  - ☎: 94066-82889

- इसी विषय के विडियो लेक्चर हमारे चैनल पर उपलब्ध हैं । आप अवश्य लाभ लें । www.Jainkosh.org/wiki/Videos पेज पर जाएँ एवं लब्धिसार की प्लेलिस्ट चुनें ।